वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य का विकास

सागर एस्. गेंड

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263912

ABSTRACT:

यह शोध-आलेख वैश्वीकरण के युग में हिंदी साहित्य के विकास और उसकी महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करता है। साहित्य को प्राचीनता से आधुनिकता तक संस्कृति और मानव-जीवन को प्रभावित करने वाली एक गतिशील शक्ति के रूप में देखा गया है। वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया है, जिससे वैश्विक स्तर पर इसका विस्तार हुआ है। भारत की 'अनेकता में एकता' की संस्कृति की पहचान के रूप में, हिंदी साहित्य ज्ञानपरक और सृजनात्मक माध्यम बना है। आलेख उन कारणों पर प्रकाश डालता है कि कैसे हिंदी भाषा विश्व में तीसरे स्थान पर पहुँचकर, डिजिटल मंचों के उपयोग से व्यापक दर्शकों तक अपनी पहुँच बना रही है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मान्यता, 'विश्वबंधुत्व' की भावना को बढ़ावा देने और विचारों के आदान-प्रदान में अनुवाद की अपरिहार्य भूमिका को रेखांकित किया गया है। निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य आज एक 'विश्व साहित्य' बनकर उभरा है, जो राष्ट्रीय स्वायत्तता और वैश्विक चेतना दोनों का सूत्रधार है।

KEYWORDS:

वैश्वीकरण, हिंदी साहित्य, विकास, अनुवाद, विश्वबंधुत्व.

'मानव भवन - आर्यजन जिसकी उतारे आरती,
भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती।'

मैथिलीशरण गुप्त (भारत - भारती)

वैश्वीकरण में साहित्य ही एक ऐसी धारणा है, जो प्राचीनता से लेकर आधुनिकता का सफर करवाता है। जिसमें संस्कृति - साहित्य, मानव - जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। और इससे वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य को एक नएपन का आयाम प्राप्त होता है। सदियों पुरानी अपनी समृद्ध परंपरा समय के साथ गहरी बन जाती है। और वैश्विक स्तर साहित्य का विकास हो जाता है।

भारत वर्ष पुरातन संस्कृति का धनी है, अनेकता में एकता यहाँ की विशेषता है। उसके साथ ही देश की संस्कृति - अस्मिता तथा मूल्य की पहचान एक स्वर - एक आत्मा के रूप में उत्तम साहित्य का विकास की भूमिका ही विश्व साहित्य में 'हिंदी साहित्य' निभा रही है। और एक उत्तम साहित्य ही सृजनात्मक और ज्ञानपरक का महत्वपूर्ण माध्यम है।

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य का प्रयोग अनेक विद्वान सातवीं सदी से मानते हैं। किंतु आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिंदी साहित्य की व्यवस्थित परंपरा 11वीं सदी से ही आरंभ होती है। लेकिन हिंदी साहित्य में गद्य लेखन का अन्य विधाओं में सृजनात्मक का उदय आधुनिक काल में ही हुआ।

जिस तरह सूर्योदय से सारे संसार में उजियाला होता है, उस तरह ही हिंदी साहित्य का विकास भी वैश्विक क्षेत्र में प्रारंभ से ही जनसंपर्क, जनसंवर्धन, जन कल्याण और मानव विकास में निरंतर विकसित हो रहा है। हिंदी साहित्य का अमूल्य भंडार विश्व के स्तर पर अनेक भाषाओं में सच्चा स्वरूप उजागर किया है। क्षण - क्षण बदलते हुए विश्व के रूप को देखने पर यह महसूस होता है कि, हिंदी साहित्य का विकास का महत्व निरंतर क्रियाशील रहा है और रहेगा। विश्व में अनेक भाषाओं में विभाजित और स्वसंचालित है। ऐसे में मानव समुदाय को एक - दूसरे से निकट आने, घुल - मिलने, समझने और मानव के जन्मजात व निर्माता ज्ञान बढ़ोत्तरी में वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य का विकास की अहम् भूमिका है। देश की एकता व अखंडता को आबाद रखने का कार्य

वैश्वीकरण में हिंदी साहित्य का विकास महत्वपूर्ण रहा है। और इससे वैश्वीकरण के अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मान्यता को भी बढ़ावा मिला है।

महानगरीय प्रकृति के उदय में हिंदी साहित्य का उदय भारत के बदलते नए सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य का प्रतिबिंब है। वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का विस्तार का विकास तीसरे स्थान पर है। और भारत में भी अनेक भाषी होकर भी हिंदी ही बड़ी संख्याओं में बोली जाती है। हिंदी साहित्य के परंपरा जो प्राचीन काल से ही चली आ रही है।

उदा- रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन वैदिक ग्रंथ। इसने आधुनिक भारत के कुछ सबसे प्रसिद्ध लेखकों को जन्म दिया है - प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन जैसे अनेकों साहित्यकारों ने भारत की गतिशीलता, विविधता, प्रवास, ग्रामीण - शहरी जीवन वास्तविकता पहचानता का परिदृश्य को दर्शाया है। नई पीढ़ी के लेखकों, साहित्यकारों को एक नए हिंदी - साहित्य का उदय के विषयों का विस्तृत श्रंखला का मंच हिंदी साहित्य प्रदान कर रहा है। इससे वैश्विक साहित्यिक मंच पर बढ़ती दृश्यता और प्रतिस्पर्धा के साथ व्यापक दर्शकों को आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण डिजिटल डिवाइड, संशोधनों उपयोग हो रहा है। और हिंदी साहित्यकारों, लेखकों के लिए व्यापक दशकों तक पहुँच बनाना अब वैश्विकता में कहीं ज्यादा आसान हो गया है।

वैश्वीकरण में हिंदी साहित्य का विकास यानी देश-विदेश के भौगोलिक एवं भाषागत दूरियों को समाप्त करके दृश्यों को जोड़ता है। साहित्य एक सेवा है, भाव है, संस्कार है, संस्कृति है। प्रत्येक देश का अपना एक श्रेष्ठतम साहित्य होता है। साहित्य से विविध समन्वय व सामंजस्य को एक रूप बनता है। हिंदी साहित्य मानव ज्ञान प्रगति में एक सशक्त माध्यम के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की धुरी है। आज विश्व के अनेक राष्ट्रों में हिंदी सिखाई तथा पढ़ाई जाती है। अमेरिका, जापान, कोरिया, सिंगापुर आदि देशों में अंग्रेजी तथा हिंदी पर समान अधिकार प्राप्त करने वाले अध्यापक को नियुक्त किया जा रहा है।

वैश्वीकरण में अनेक भाषाएँ होने के कारण देश - विदेशी भाषाओं के साहित्य में व्यक्त विचार, भाव तथा संस्कृति से परिचित होने का और हिंदी को वैभव पूर्णता से व्यक्त करने के लिए अनुवाद की भूमिका भी

महत्वपूर्ण है। अनुवाद वह सेतु है जो साहित्य के माध्यम से वैचारिक समन्वय तथा भावात्मक एकात्मता प्रतिष्ठापित करता है। और इससे देश-विदेश के महत्वपूर्ण प्रभावशाली साहित्य का अनुवाद करके हिंदी साहित्य विकास का मंच परिवर्तन आया है। विश्व पटल पर विश्व भाषा के रूप में हिंदी को जो गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त है, उससे अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्योंकि हिंदी भाषी साहित्यकारों के अलावा अन्य भारतीय विदेशी भाषाओं के साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य विकास और सृजन कार्य में काफी योगदान दिया है। और इनका यह कार्य विश्वव्यापी हिंदी विकास, प्रचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उदा- हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासकारों में किशोरी लाल गोस्वामी का नाम अग्रगण्य है। उसके अतिरिक्त अन्य विदेशी - देशी भाषाओं से समय-समय पर अनुवाद होते रहे और हिंदी साहित्य को समृद्ध करते रहे।

हिंदी भाषा केवल भारत ही नहीं बल्कि समस्त विश्व में अपने कदम जमा चुकी है। भारत के बाहर भी विदेशी भी हिंदी बड़े ही आनंद से सीख रहे हैं। और हिंदी भाषा विश्व की चेतना और विश्व संपर्क का सूत्रधार बन गया है।

निष्कर्ष के रूप में यह कह सकते हैं कि, भारत एक बहुभाषी एवं बहुजातीय देश होने पर भी ऐसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग में हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा - साहित्य है। आधुनिक युग, वैश्वीकरण का सूचनापरक युग, ज्ञान - विज्ञान के ज्ञान से भरे हैं लेकिन इसी उपरांत हिंदी आज विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा - साहित्य बनकर उभरी है। वैश्वीकरण के परिणाम - स्वरूप हिंदी का संप्रेषणात्मक रूप तेजी से बदला है और हिंदी एक सशक्त शक्ति बनकर विदेशों में हर एक क्षेत्र में बहार दिखाई देती है। और हिंदी - साहित्य 'विश्व साहित्य' की अस्मिता का स्थान प्राप्त कर रही है। और विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में विशेष भूमिका निभा रही है। इससे हिंदी - साहित्य का कोष अत्यंत धनी बनता जा रहा है। अतः वैश्वीकरण में हिंदी - साहित्य का विकास हमारे चिंतन की, हमारे सपनों की, हमारे प्रतिरोध की भाषा बनाकर हमारी सांस्कृतिक, राष्ट्रीय स्वायत्तता की रक्षा बनकर हमें ताकत देती है, साथ ही साथ यह 'विश्वबंधुत्व और वसुधैव कुटुंबकम्' का एकमात्र सूत्र साबित हो सकता है।

संदर्भित ग्रंथ:

1. वैश्वीकरण की प्रक्रिया और हिंदी साहित्य : एक समीक्षा
2. भारतीय साहित्य और अनुवाद
3. वैश्विक संदर्भ में अनुवाद की भूमिका

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.